कारक (Case)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उसका संबंध वाक्य में क्रिया से जाना जाता है, उसे 'कारक' कहते हैं; जैसे— तुम मेज़ से काग़ज़ निकालकर और कुर्सी पर बैठकर कलम से अपने पिता को पत्र लिखो। इस वाक्य में मेज़ (से) कुर्सी (पर), कलम (से), पिता (को) आदि संज्ञा शब्दों के साथ आए विभक्ति चिह्न, इन संज्ञा शब्दों का संबंध क्रिया 'लिखो' से जोड़ रहे हैं। अन्य शब्दों का संबंध क्रिया से जोड़ने वाले ये विभक्ति चिह्न 'कारक' कहलाते हैं। इन कारक चिह्नों को 'परसर्ग' भी कहा जाता है।

कारक के भेद (Kinds of Case)

हिंदी में कारक आठ प्रकार के हैं :

क्र०सं०	कारक	परसर्ग	पहचान	उदाहरण	वाक्य-प्रयोग
1.	कर्ता (क्रिया को करने वाला)	शून्य, ने	कौन ? किसने ?	रोहित रोहित ने	रोहित पतंग उड़ा रहा है। रोहित ने पतंग उड़ाई।
2.	कर्म (जिस पर क्रिया का फल पड़े)	शून्य, को	क्या ? किसको ?	कहानी पुत्र को	सोनिया कहानी पढ़ती है। पिता ने पुत्र को बुलाया।
3.	करण (क्रिया करने का साधन)	से, के द्वारा, द्वारा	क्या ? किससे ? किसके द्वारा	कार से ब्रश के द्वारा पेन द्वारा	रोहन कार से बाज़ार जाता है। गौतम ब्रश के द्वारा चित्रकारी करता है मैं पेन द्वारा लिखती हूँ।
4.	संप्रदान (जिसके लिए क्रिया की जाए)	के लिए को के अर्थ के निमित्त	किसके लिए ? किसको ? किस अर्थ किस निमित्त	माँ के लिए मीना को जीने के अर्थ परोपकार के निमित्त	जसिका माँ के लिए फल लाई। मोहित ने मीना को पुस्तक दी। जीने के अर्थ कब समझोगे ? परोपकार के निमित्त सद्कार्य करो।
5.	अपादान (जिससे अलगाव हो)	से	किससे	पेड़ से	पेड़ से फल गिरा।
6.	संबंध (वाक्य में अन्य पदों से संबंध दर्शाने वाला)	का, के, की रा, रे, री, ना, ने, नी	किसका ? किसके ? किसकी ?	रीता का मेरी बहन अपना	रीता का भाई कल हमारे घर आएगा। मेरी बहन डॉक्टर है। अपना काम करो।
7.	अधिकरण (क्रिया का आधार)	में, पर	किसमें ? किस पर	कक्ष में कुर्सी पर	संगोष्ठी कक्ष में संगोष्ठी चल रही है। कुर्सी पर कपड़े पड़े हैं।
8.	संबोधन	हे, अरे	.....	हे ईश्वर	हे ईश्वर! दया करो।